भारतीय क्रांति के वरिष्ठ नेता, संशोधनवाद के खिलाफ लड़ने वाले अथक योध्दा और भाकपा (माओवादी) के पोलिट ब्यूरो सदस्य कामरेड विप्लव सुशील राय उर्फ बरुण दा को लाल सलाम! आईये उनके त्याग व आदर्शों को ऊंचा उठाते हुए क्रांति को आगे बढ़ाएं!

"मानव जीवन में मौत आती ही है. मैने अपनी पूरी जिंदगी अपनी शोषित-उत्पीड़ित जनता और मातृभूमि की मुक्ति के संघर्ष में लगा दी है. मैं इस संघर्ष को मौत के बाद भी जारी रखना चहाता हूं. इसलिए मैं चहाता हूं कि किसी धार्मिक रीति-रिवाज के जरिये मेरा अंतिम संस्कार न किया जाये, मेरे शव को लोगों के क्लयाण के लिए हस्पताल को दान में दे दिया जाये. ताकि मेरा शरीर चिक्तिसा विज्ञान व लोगों के विकास के लिए काम आ सके. यही मेरी अंतिम इच्छा है!"

कामरेड सुशील राय

ये शब्द उस शख्स ने अपनी शहादत से पहले अपने भाई को कहे थे, जिस शख्स को पश्चिम बंगाल व भारत सरकार ने 68 साल की उम्र में गिरफ्तार करके सालों तक जेल में सड़या, उसका ठीक से इलाज तक नहीं होने दिया. और उसे मौत के मुंह में धकेल दिया. ये शब्द उस शख्स के है जो अपने देश को असीम प्यार करता था लेकिन उस पर देशद्रोह का मुकद्दमा चलाया गया, जिसे देश की 'आंतिरक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा' माना. उनका नाम है कामरेड विप्लव सुशील राय, जो क्रांतिकारी हल्को में कामरेड वरुण दा के नाम से प्रसिध्द थे. उन्होंने न केवल आखरी सांस तक देश की शोषित-पीड़ित जनता के लिए त्याग और बलिदान दिये बल्कि मौत के बाद भी उसने अपना शरीर जनता व देश के चिक्तिसा विज्ञान के विकास के लिए सौंप दिया.

कामरेड वरुण दा 18 जून 2014 को, 78 साल की उम्र में देश की जनता को अंतिम लाल सलाम पेश कर भौतिक रुप से हमसे जूदा हो गए. उन्होंने नई दिल्ली के एम्स हस्पताल में आखरी सांसे ली. उनके परिजनों व क्रांति समर्थक बुध्दिजीवियों, मानव अधिकार कार्यकर्ताओं, प्रगतिशील, जनवादी लोगों ने उनके शरीर को, उनकी इच्छा के अनुसार एम्स हस्पताल को दान कर दिया.

कामरेड बरुण दा हमारी पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य थे.उनकी पूरी जिंदगी संघर्षों से भरी हुई है. एक तरफ उन्होंने शोषक-शासकों के खिलाफ जनता का नेतृत्व किया वहीं भाकपा, माकपा के संशोधनवाद के खिलाफ भी अथक संघर्ष किया. उनको 22 मई 2005 को पश्चिम बंगाल पुलिस ने गिरफ्तार किया था. तब वह हावड़ा-हुगली-कोलकाता मजदूरों को संगठित करने के काम में लगे हुए थे. जब उनको गिरफ्तार किया गया तो उनकी उम्र 68 साल की थी.सालों तक उनको सरकार ने जमानत नहीं दी. उनका स्वास्थ्य दिन ब दिन बिगड़ता गया. जब उनके बचने की आशा नहीं रही, तब क्रूर फासीवादी सरकार ने उनको इलाज के लिए जमानत दी. अंततः 18 जून 2014 को वह शहीद हो गए.

उनके क्रांतिकारी जीवन की शुरुआत 1961 में शुरु हुई. तब वह पश्चिम बंगाल के बंशादरोनी इलाके की उषा फेन कंपनी में स्थाई नौकरी करते थे. उनकी कंपनी में मजदूरों ने अपनी बुनियादी मांगो को लेकर हड़ताल शुरु की थी. तब चीन के साथ भारत का युध्द चल रहा था. नेहरु सरकार ने सभी कारखानों में हड़तालों को गैर कानूनी घोषित कर दिया था. उस हड़ताल में कामरेड सुशील राय ने सक्रिय भूमिका अदा की थी. छह महा चली हड़ताल के बाद सरकार व कंपनी को मजदूरों की मांग माननी पड़ी थी. इस प्रकार वह भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई) की ट्रेड यूनियन से जुड़े और एक क्रांतिकारी मजदूर नेता के रुप में स्थापित हुए.

1963-64 में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर रुस और चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के बीच 'महान बहस' हुई. उस महान बहस ने भारत के कम्युनिस्ट आंदोलन को भी प्रभावित किया और वरुण दा काम करने वाली यूनियन को भी. कामरेड वरुण दा ने रुस के ख्रुश्चेव के संशोधनवाद की कड़ी आलोचना की और चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का पक्ष चुना. पूरी पार्टी उस समय दो गुटों में बंट गयी थी एक रुस का पक्ष लेता था तो दूसरा चीन का पक्ष लेता था. 1964 में हुई भाकपा की सातवीं कांग्रेस में पार्टी विभाजित हो गयी. तब सीपीआई (मार्क्सवादी) का जन्म हुआ. तब वरुण दा माकपा में शामिल हो गए.

जब अमेरिकी साम्राज्यवाद ने वियतनाम पर क्रूर फासीवादी सैनिक हमला शुरु कर दिया तब पूरी दुनिया अमेरिकी साम्राज्यवाद के खिलाफ सड़कों पर उतर आई. पार्टी ने वरुण दादा को दक्षिण कोलकाता की जनता को संगठित करने की जिम्मेदारी प्रदान की. उन्होंने पार्टी के आव्हान पर हजारों-हजार जनता को संगठित किया. पूरा कोलकाता अमेरिकी साम्राज्यवाद के विरोध में सड़कों पर उमड़ आया. तब उन्होंने नारा लगाया था 'तोमार नाम, आमार नाम, वियतनाम' यानी तेरा नाम, मेरा नाम वियतनाम! 1966 में अकाल के खिलाफ खाद्य आंदोलन शुरु हुआ. पार्टी ने 72 घंटों का बंगाल बंद का आव्हान दिया. तब भी दक्षिण कोलकाता की जनता ने कामरेड वरुण दा के नेतृत्व में अहम भूमिका निभाई. तब बंगाल व केंद्र में कांग्रेस की सरकार थी. कांग्रेसी गुंडो व पुलिस ने मिलकर उन पर हमला किया और जेल में डाल दिया.

कांग्रेस के दमन व अत्याचारों के खिलाफ बंगाल में पहली बार 1967 में कम्युनिस्टों के नेतृत्व में संयुक्त मोर्चा की सरकार बनी. लेकिन कुछ ही दिनों के बाद 1967 में कोलकाता से बहुत दूर नक्सलबाड़ी की चिंगारी भड़की. किसानों ने जमींदारों की जमीनों पर कब्जा कर लिया. कामरेड चारु मजूमदार की अगुवाई में आंदोलन पूरे भारत में दावनल की तरह फैल गया. तब भाकपा, माकपा व संयुक्त मोर्चा की सरकार ने नक्सलबाड़ी आंदोलन को चरमपंथी बताते हुए, उस पर दमन चालू कर दिया. 25 मई को नक्सलबाड़ी गांव पर हमला कर संयुक्त मोर्चा की सरकार ने 11 लोगों का कत्ल कर दिया जिसमें 2 बच्चे भी शामिल थे. कामरेड बरुण दा पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा. महान बहस की रोशनी में, चीनी क्रांति के इतिहास को देखते हुए उन्होंने अपनी पार्टी माकपा का विरोध करते हुए नक्सलबाड़ी आंदोलन का पक्ष चुना और उसका समर्थन करने लगे. उन्होंने नक्सलबाड़ी आंदोलन को मात्र एक घटना के तौर पर नहीं बल्कि उनके शब्दों में कहा जाये तो 'सत्ता दखल करने की एक वैक्लपिक राजनीतिक-सांगठनिक लाईन के तौर पर देखा'. कोलकाता में माकपा के नेताओं के सामने उन्होंने सवाल उठाये, कई मीटिंगों में बहसे की. उन्होंने सीपीएम पर सवाल उठाये कि वह क्रांति को आगे नहीं बढ़ा रही है. सही राह नक्सलबाड़ी की राह है. इस प्रकार वह अपने विचारों और सपनों को धरातल पर उतारने के लिए पूरी तरह से 1968 में क्रांतिकारी आंदोलन में कूद पड़े. उन्होंने अपनी नौकरी व चाहाने वालों को छोड़ कर सूदूर ग्रामीण क्षेत्र को आपनी कर्मभूमि बनाया और हजारों-हजार जनता को गोलबंद किया.

कामरेड कन्नाई चटर्जी, अमूल्य सेन, चंद्रशेखर दास जैसे संशोधनवाद के खिलाफ लड़ने वाले योध्दाओं के साथ मिलकर उन्होंने माओइस्ट कम्युनिस्ट सेंटर (एमसीसी) की नींव रखी. उन्होंने अपनी पूरी उम्र चीनी क्रांति से सबक लेकर स्थापित की राजनीतिक-सांगठनिक-सैनिक लाईन को मजबूत करने और भारतीय क्रांति को पूरा करने में लगा दी. एमसीसी को बंगाल से विस्तार करते हुए झारखंड, बिहार, असाम, हरियाणा, पंजाब, ओड़िशा, छत्तीसगढ़ तक फैलाने में उन्होंने अपना अहम योगदान दिया. कामरेड कन्नाई चटर्जी, कामरेड अमूल्य सेन जैसे वरिष्ठ नेताओं के शहीद हो जाने के बाद उन्होंने पार्टी को नेतृत्व प्रदान किया. वह 1995 तक एमसीसी के महासचिव रहे.

एमसीसी और पीपुल्सवार की एकता में भी उनके अहम योगदान को कभी भारतीय क्रांतिकारी इतिहास भूल नहीं सकता. उन्होंने 1984-95 में हुए एकता प्रयासों में भी सकारात्मक भूमिका निभाई थी. लेकिन कुछ कारणों के चलते एकता विफल हो गयी थी. एमसीसी और पीपुल्सवार के बीच हुई खूनी झड़पों के काले अध्याय को खत्म कर, लाल अध्याय में बदलने में कामरेड बरुण दा ने भरपूर योगदान दिया. जिसका नतीजा 21 सितंबर 2004 को हुई दोनों पार्टियों की एकता है. उन्होंने उन नेतृत्वकारी कामरेडों के खिलाफ भी अथक संघर्ष चलाया जो दोनों क्रांतिकारी पार्टियों की एकता होने में बाधा डाल रहे थे. कामरेड बरुण दा हमेशा नौजवानों से आशाएं करते थे. हमेशा नेतृत्व को विकसित करने के लिए प्रयास करते थे. अपने से निचले कैडर को ऊपर उठाने के लिए शिक्षित करते और उनका सहयोग करते थे.

1995 में उनकी आंख का ऑपरेशन हुआ था. लेकिन ऑपरेशन सफल नहीं होने से एक आंख की रोशनी पूरी तरह चली गयी थी. इसके बाद भी उनकी क्रांतिकारी उर्जा और उत्साह में कोई फर्क नहीं आया. वह हमेशा युवा की तरह पार्टी कामकाज में अपनी भूमिका निभाते रहे. अपनी गिरफ्तारी के समय भी वह हावड़ा-कोलकाता-हूगली मजदूर क्षेत्र में उन्हें संगठित कर संघर्ष पथ पर बढ़ा रहे थे. दुश्मन की फासीवादी जेलें भी उनके उत्साह व जोश को तोड़ नहीं पाई. 2012 में इंडियन एक्सप्रैस नामक दैनिक समाचार पत्र को दिया उनका ऐतिहासिक साक्षात्कार इसका गवाह है. जिसे अपनी हेडिंग में लिखना पड़ा 'स्वास्थ्य कमजोर लेकिन हौंसले बुलंद'!

भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के विकास में, माओवादी पार्टी की स्थापना में, और तमाम उतार-चढ़ावों में कामरेड वरुण दा के योगदान को हमेशा याद रखा जायेगा. वह भारतीय उपमहाद्वीप के क्रांतिकारी आंदोलन व क्रांतिकारी पार्टियों का जीता-जाता एनसाईकलोपिडया थे. हर ऐतिहासिक घटना को उन्होंने अपनी आंखों से देखा. खासकर भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन के विकासक्रम में उन्होंने अपना अहम योगदान दिया. उनके पास क्रांति के अपार अनुभव थे. आज जब दुनिया की क्रांतिकारी परिस्थितियां अभूतपूर्व रुप से क्रांति के अनुकूल बनती जा रही हैं और भारत के शोसक-शासक वर्ग क्रांतिकारी आंदोलन को कुचलने के लिए पूरजोर प्रयास कर रहे हैं, जब भाकपा (माओवादी) और भाकपा (माले) (नक्सलबाड़ी) मिलकर एक पार्टी बन और मजूबत होने के इरादे से आगे बढ़ रही है तब ऐसे अनुभवी कामरेड की बेहद जरुरत थी. आज उनकी शहादत से भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन को एक बहुत भारी क्षति हुई है.

हमारी राज्य कमेटी शोकसतंप्त वरुण दा के परिजनों, दोस्तों, शुभचितंको, पार्टी कतारों के प्रति गहरी सहानभूमि प्रकट करती है. तमाम पार्टी सदस्यों, पीएलजीए के लाल योध्दाओं, जन संगठनों के नेता व कार्यकर्ताओं से आव्हान करती है कि उनके द्वारा स्थापित किये गए आदर्शों को आत्मसात करें, अपने गैर सर्वहारा रुझानों के खिलाफ लड़कर उनके सपनों को पूरा करने के लिए शपथ लें. जनता से आव्हान है कि अपने-अपने गांव में, बस्ती में, शहर में उनको याद करें. उनके दिखाए गए रास्ते पर आगे बढ़ें.

- **कामरेड सुशील राय अमर रहें!**
- **नवजनवादी क्रांति जिंदाबाद!**
- **मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद जिंदाबाद!**

24 जुलाई 2014

ओड़िशा राज्य कमेटी भाकपा (माओवादी)